kissekahani.com

दिल्ली स्टाकिस्ट : कमल सैलेक्शंस, 10 पालिका पार्किंग, रीगल के सामने, नई दिल्ली – 110001
बम्बई स्टाकिस्ट : पापुलर वीडियो कैसेट कं., 34/ए, करतार मैनशन, दुकान न. 12-डी-2, लैमिंगटन रोड़, बम्बई – 400007
रायपुर स्टाकिस्ट : गैसर्स वीडियो वर्ल्ड, गोथा पारा, रायपुर – 490001

छोटी सी बात

बहुत पुरानी बात है, आनंद पुर रियासत में प्रजा बहुत सुखी थी, चारों ओर अमन चैन था जनता अपने राजा रघुसिंह की तारीफ करते न थकती थी। राजा कुशल प्रशासन, न्यायप्रियता के लिए प्रसिद्ध था, पूरे राज्य में भ्रष्टाचार का नामोनिशान न था। राजा स्वयं वेश बदल कर प्रजा के दुःख सुख तथा प्रशासन व्यवस्था को देखता था।

आनंदपुर के साथ लगी एक रियासत भी चन्द्रपुर, वहाँ का राजा अजय सिंह भी अपनी प्रजा की अच्छी देखभाल करता था पर आनंदपुर जैसा अमन चैन वहाँ नहीं था आनंदपुर की सुख शांति को देखकर अक्सर उसे ईर्ष्या होती थी। वह भी अपनी रियासत में आनंदपुर जैसी स्थिति चाहता था पर लाख प्रयास करने के बाद भी ऐसी स्थिति नहीं आ पा रही थी।

काफी सोच विचार के पश्चात राजा अजय सिंह ने झट तय किया कि आनंदपुर में अपने गुप्तचर विभाग के प्रमुख को भेजा जाये तथा उसके द्वारा वहाँ की अच्छी स्थिति होने का राज पता किया जाये। आदेश मिलते ही गुप्तचर विभाग के प्रमुख ने साधू का वेश बनाया और आनंदपुर के घने जंगल में जाकर रहने लगा। जंगल में लकड़ी काटने वाले आदिवासी, पशु चराने वाले आते थे, उनसे कुछ पता लगाने का प्रयास किया पर कुछ नतीजा न निकला, सभी लोग अपने राजा की तारीफ करते थे, किसी ने एक शब्द भी अपने राजा के खिलाफ नहीं कहा। महात्मा के रूप में गुप्तचर ने राजधानी व अन्य

कस्बों की यात्रा भी की, लोगों से कुरेद कुरेद कर बहुत कुछ पूछा पर कोई रहस्य हाथ न लगा।

एक दिन अचानक एक घटना घट गयी। हुआ यह कि महात्मा जी की झौपड़ी पर दो सिपाही आए और थोड़ा सा नमक देने का आग्रह करने लगे। महात्मा जी के लिए अच्छा मौका था, उन्होंने सैनिकों को बैठाया और पानी पिलाया। थोड़ा सा नमक देते हुए पूछा इस घने जंगल में नमक की क्या जरूरत पड़ गयी, क्या यहाँ कहीं खाना बन रहा है।

सैनिकों ने सबकुछ सही सही बताते हुए कहा। आनंदपुर के राजा रघुसिंह का शिविर जंगल में लगा है। सभी सामान तो साथ आया है पर नमक भूल से रह गया है। सैनिकों ने नमक तो ले लिया परन्तु उसके मूल्य के रूप में कुछ पैसे देने लगे। इस पर महात्मा जी बोले नहीं भाई मैं पैसे नहीं ले सकता। यह बहुत छोटी बात है, मुझे शर्मिन्दा मत करो, क्या मैं अपने राजा के लिए दो पैसे का नमक भी नहीं दे सकता?

सैनिकों ने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक कहा महाराज, हम बिना मूल्य दिए नमक नहीं ले सकते। आप यदि पैसे नहीं लेंगे तो हम खाली हाथ लौट जाएंगे। हमारे राज्य में कोई कर्मचारी जनता के किसी भी व्यक्ति से छोटी से छोटी चीज भी मुफ्त में नहीं लेता, यह हमारे यहाँ का नियम है।

महात्मा रूपी गुप्तचर ने नमक के बदले पैसे ले लिए। इस घटना से उसे वह रहस्य सहज ही मिल गया जिसे वह पिछले एक साल के तलाश रहा था। उसने अपने राजा अजय सिंह के

> मस्तिष्क का अपना एक विशेष स्थान है और वह स्वर्ग को नरक में तथा नरक को स्वर्ग में बदल सकता है
> -मिल्टन

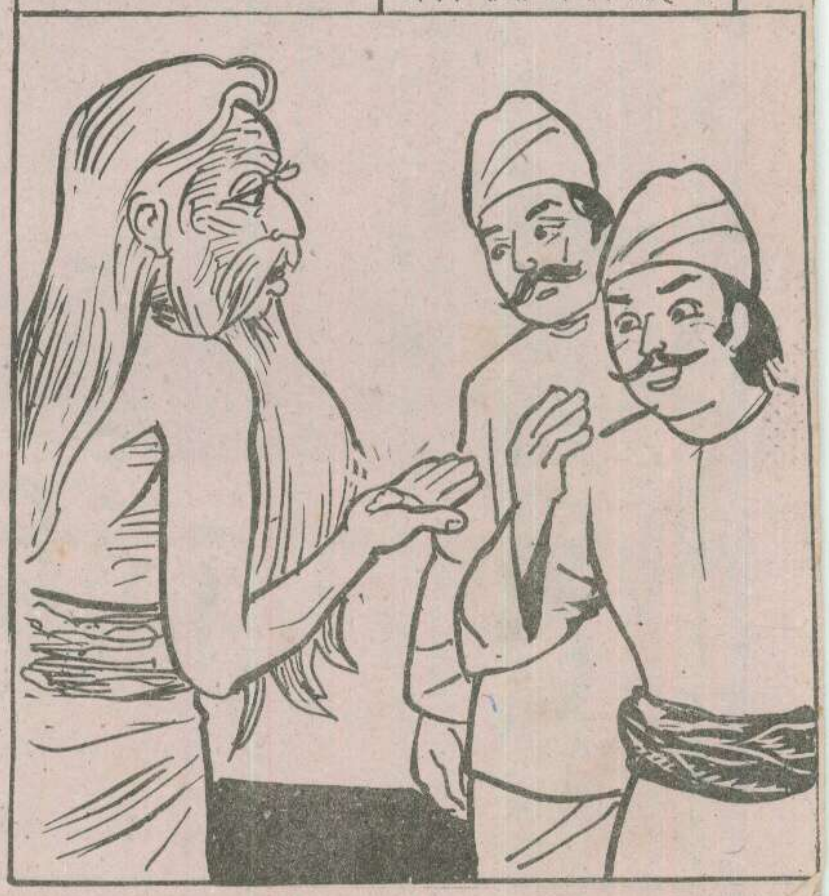

घर भर के मनोरंजन के लिए एक ही नाम

पिटारा कॉमिक्स

आज ही अपने पत्र विक्रेता से खरीदें
सभी रेलवे बुक स्टालों पर भी उपलब्ध है

पिटारा कॉमिक्स, ए -5, मायापुरी, नई दिल्ली - 110064
दूरभाष - 5433120, 591439, 5457636

मूल्य
3/- रूपये

kissekahani.com

पास जाकर कहा श्रीमान आनंद पुर के सुख चैन का राज है कि वहाँ के राजा छोटी छोटी बातों पर भी ध्यान देते हैं क्योंकि छोटी छोटी गड़बड़ियाँ ही आगे चलकर भयंकर भ्रष्टाचार का कारण बनती है। अपने साथ घटी छोटी सी घटना सुना दी और कहा वहाँ का कर्मचारी पूरी तरह ईमानदार है। आज उसे यदि नमक लेने की छूट होगी। तो कल आटा दाल भी मुफ्त में लेगा। राजा अजय सिंह ने इससे प्रेरणा ग्रहण कर अपने राज्य में भी सुधार शुरू किया।

-मदन गोपाल शर्मा

साप्ताहिक लोटपोट
6-9-92 अंक 1067

सम्पादक एवं प्रकाशक:
: ए.पी. बजाज
सह-सम्पादक :
: अमन
: श्वेता
✪ पताः लोटपोट साप्ताहिक
ए-5, मायापुरी,
नई दिल्ली-110064
दूरभाषः 5433120-591439
5457636-536103
TLX No.-031-76125 MPLP IN
मुद्रक : अरोड़बंस प्रेस
मायापुरी,
नई दिल्ली-110064

'लोटपोट' शीर्षक आर.एन.आई भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है। लोटपोट में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। इसलिए बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उदधृत नहीं की जानी चाहिए।

प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, जीवित मृत स्थानों घटनाओं या संस्थाओं से उनकी किसी प्रकार की समानता संयोग मात्र है। चित्रांकन, चित्रकार की कल्पना पर ही आधारित है, सम्पादक एंव प्रकाशक किसी प्रकार के उत्तरदाई नहीं होंगे।

प्रकाशित लेखों के लेखकों की राय से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं, किन्तु छपे लेखों पर अगर किसी को आपत्ति हो तो वह अपनी प्रतिक्रिया हमें लिखकर भेज दे। मिलने पर छपने योग्य होने पर सहर्ष छाप दी जाएगी।

इस पत्रिका के संबंध में किसी भी प्रकार के मतभेद एंव विवाद आदि केवल दिल्ली कोर्टस से ही निपटाए जा सकते हैं।

पांच रूपये में कोट

अभिनव अपने मम्मी पापा के साथ दिल्ली से जबलपुर आ रहा था, रास्ते में उन्हें कटनी स्टेशन पर गाड़ी बदलनी थी। जबलपुर जाने वाली गाड़ी में आधे घंटे का समय था सो अभिनव ने सोचा क्यों न उतनी देर में स्टेशन के बाहर घूम आया जाए।

स्टेशन के बाहर निकला तो एक जगह गरमा गरम छोले भटूरे बिकते देख उसकी भी खाने की इच्छा हो उठी। दिसम्बर की ठंड में गरम गरम छोले भटूरों का मजा ही कुछ और था। खा चुकने के उसने बाद दुकानदार को पांच रूपये का नोट दिया जिसमें से तीन रूपये काटकर दो रूपये उसे वापस मिलने वाले थे पर यह क्या दुकानदार ने भीड़ की हड़बड़ी के कारण उसे सात रूपये वापस कर दिए। अभिनव ने चुपचाप रूपये जेब में रखे और वापस चल दिया।

कुछ दूर चलने पर ही उसके मन में विचार आया कि यह उसने अच्छा नहीं किया, माना कि दुकानदार ने गलती से अधिक पैसे वापस

कर दिये पर उसे क्या यूं चुपचाप वो पैसे रख लेने चाहिए थे ? क्या यही है उसकी ईमानदारी! नहीं नहीं, वो ये रूपये वापस कर देगा।

अभिनव ने घड़ी देखी, गाड़ी आने में केवल दस मिनट बाकी थे। वह दौड़ता हुआ वापस गया व उसने पांच रूपये का नोट दुकानदार को वापस देते हुए पूरी बात बता दी। रूपये वापस कर ज्योंही वह चलने को हुआ उसकी नजर कोने में रखे हुए कोट पर पड़ी, अरे यह तो उसी का कोट है। उसे ध्यान आया कि जब वह दुकान पर पहुँचा था तो कोट उसने हाथों में ले रखा था और छोले भटूरे खाते समय वहीं कोने में रख दिया था। चलते समय पांच रूपये अधिक पा जाने की खुशी में वह कोट को भूल ही गया था।

स्टेशन वापस जाते समय अभिनव सोच रहा था कि हर अच्छे काम का परिणाम अच्छा ही होता है। अगर वह पांच रूपये लौटाने न जाता तो कोट से हाथ धो बैठता न, यानि पांच रूपये में उसे यह कोट मिल गया।

-विजय कुमार

बूंद

आसमान से आई बूंद।
ढेरों खुशियां लाई बूंद।
संग हवा के झूम झूम के
इधर उधर लहराई बूंद।
मोती जैसी झिलमिल करती
सबके मन को भाई बूंद।
बादल की गोदी में छुपकर
लगती है शरमाई बूंद।
वर्षा और हरियाली का
शुभ संदेशा लाई बूंद।

-किरन

चिंपू
काजलकुमार
अबे ओ हद्दू दर रुक जा
निकाल तेरे पास क्या माल है, वरना अभी तेरी मुंडी धड़ से अलग हुई जाती है
असली रिवाल्वर से?
अबे ओ टुन्ना, ये नकली नहीं असली है...

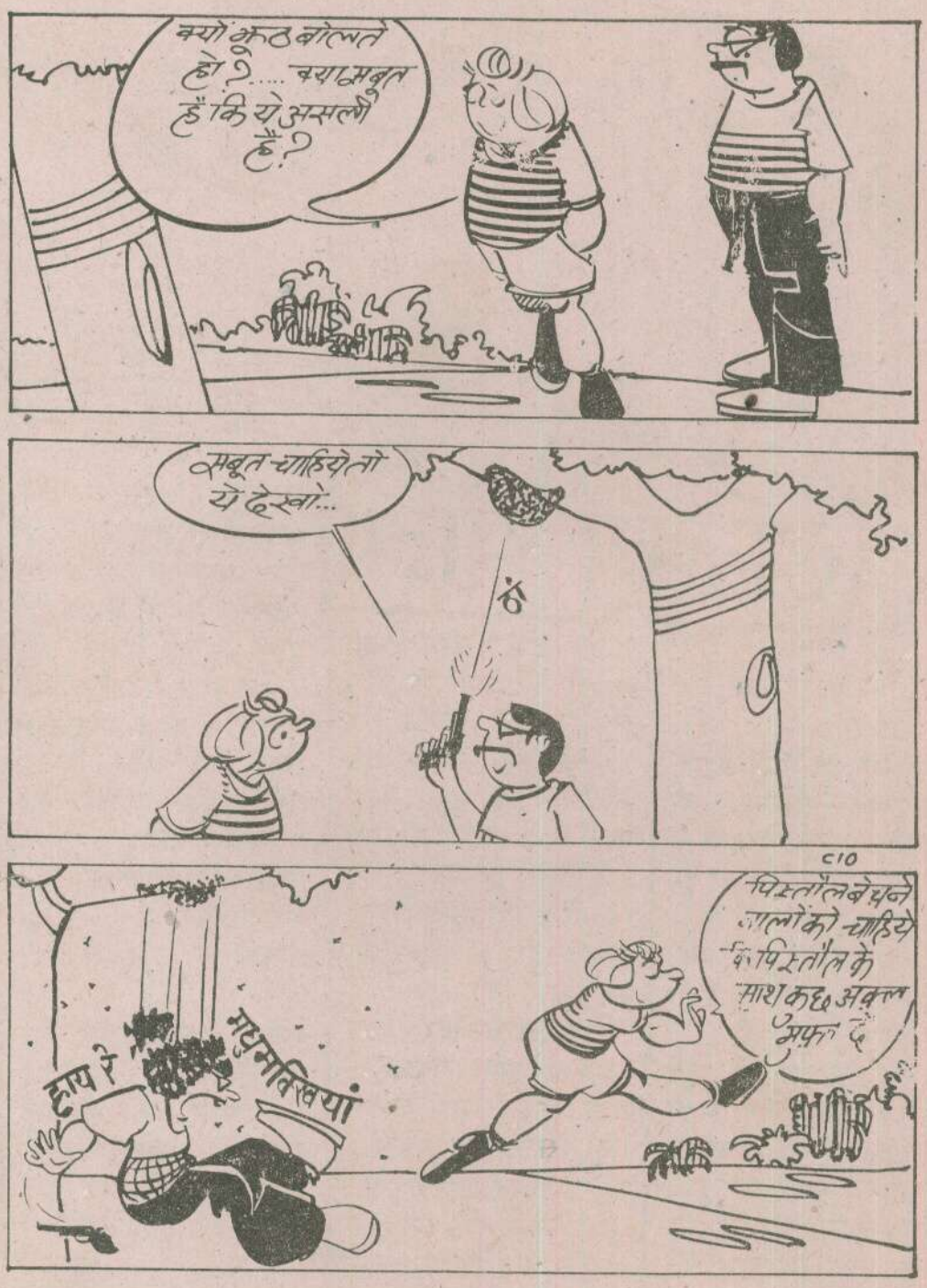
क्यों झूठ बोलते हो?..... क्या सबूत हैं कि ये असली हैं?
सबूत चाहिये तो ये देखो...
ठं
C10
पिस्तौल बेचने वालों को चाहिये कि पिस्तौल के साथ कुछ अक़्ल मुफ़्त दें
हाय रे मच्छरमक्खियां

kissekahani.com

बादल की यात्रा

नदी का पानी समुंद्र से मिला तो समुंद्र ने उसे प्यार से अपनी गोद में ले लिया, 'आओ बेटे एक दिन मेरी ही गोद से तुम सूरज चाचा के साथ घूमने गए थे बड़ी दूर की यात्रा करके लौटे हो। बताओ क्या क्या हुआ, कहां कहां गए व रास्ते में किस किस से मुलाकात हुई?'

पानी बोला बताता हूँ। जरा साँस तो लेने दीजिए बहुत थक गया हूँ। थोड़ा आराम करके पानी ने बताया, सूरज चाचा अपनी किरणों पर बिठा कर मुझे यहाँ से ले गए थे, मेरा इस रूप में जाना कठिन था तो उन्होंने अपनी किरणों की गर्मी से भाप बनाकर मुझे हल्का कर दिया और मैं ऊपर आकाश की ओर उड़ चला। बड़ा मजा आया घर, पेड़ सभी मुझसे नीचे होते जा रहे थे। और मैं ऊपर उठता जा रहा था। सभी मुझे बादल कह कर पुकारने लगे।

मैं बादल बन कर कभी पतंगों के साथ खेलता तो कभी उड़ती चिड़िया के साथ ऊपर से नीचे का दृश्य बड़ा प्यारा दिखाई दे रहा था। सूरज चाचा बड़े जोर से चमकते थे। धरती पर रहने वाले सभी प्राणी व पेड़ पौधे व्याकुल हो रहे थे कभी कभी मैं सूरज चाचा से भी लुका छिपी का खेल खेलता उनके सामने मैं आ जाता तो धरती पर घटा हो जाती और गर्मी से परेशान लोगों को जरा सा चैन मिल जाता पर तभी चाचा फिर बाहर निकल आते और लोग फिर व्याकुल हो जाते।

धीरे धीरे सूरज चाचा की गर्मी से धरती की नदियाँ, तालाबों व समुंद्रों में रहने वाले मेरे भाई भी भाप बनकर आकाश में मेरे पास इक्टठे होने लगे और जब हम बहुत सारे बादल इक्ट्ठे हो गए तो हमने चाचा को पूरी तरह ढक लिया फिर सूरज चाचा ने हमसे कहा कि वो हमें गर्मी से व्याकुल धरती की भलाई

के लिए ही ऊपर ले गए थे। उन्होंने कहा अब हमें फिर से जल बनकर धरती पर आना चाहिए जिससे धरती को ठडंक व आराम मिल सके।

धीरे धीरे हम इतने घने व भारी हो गए कि हवा में रहना कठिन हो गया और हम वर्षा का पानी बनकर धरती पर बरस पड़े। हमारे बरसने से लोग बहुत खुश हुए। पेड़ पौधे भी खुशी से झूमने लगे फसलें भी लहलहाने लगी।

ये तो तुमने बहुत अच्छा काम किया पर सच सच बताना तुमसे सब लोगों को आराम ही मिला या किसी को तुमने कष्ट भी दिया ? मैं जानता हूँ तुम बहुत शैतान हो कहीं न कहीं तुमने कोई न कोई शरारत तो जरूर की होगी इतने दूर के सफर में, जिससे किसी को दुख पहुँचा हो, समुंद्र ने कहा।

नहीं काका मैंने तो कोई शैतानी नहीं की हाँ मेरे द्वारा कहीं कहीं परेशानी जरूर हुई पर उसमें मेरा कोई दोष नहीं था वो आदमियों की अपनी गलती से हुआ मैं तो केवल एक साधन बन गया।

जरा खुलकर बताओं क्या हुआ, तुम किस बारे में ये बात कर रहे हो ? वो बात ये है काका कि बारिश के रूप में नीचे आने के बाद मैं तालाबो में व नदियों आदि में इक्ट्ठा हो गया। कहीं कहीं नदियों में मैं इतनी तेजी से बहकर इतनी अधिक मात्रा में आया कि बाढ़ आ गई और मैं अपने साथ गाँव के गाँव डुबो कर बहुत सामान बहा कर ले गया।

पर ये सरासर तुम्हारी गलती है आदमी का भला क्या दोष ? दोष है काका वह बहुत तेजी से पेड़ काट रहा है। पेड़ों की जड़े ही जमीन के अंदर दूर दूर तक फैल कर मिट्टी को अपने अंदर मजबूती से जकड़े रहती है इससे नदियों का किनारा मजबूत बना रहता है फिर हम उस किनारे को आसानी से काट नहीं सकते पर जब पेड़ ही नहीं होते तो किनारे की मिट्टी आसानी से हमारे साथ बह जाती है किनारे टूट जाते हैं और मैं सारे में फैलकर बाढ़ का रूप ले लेता हूँ अब आप ही बताइए समुंद्र काका इसमें मेरा दोष है या पेड़ काटने वालों का ?

हाँ बेटा तुम ठीक कहते हो अच्छा अब तुम मेरी गोद में कुछ दिन आराम कर लो क्योंकि कुछ समय बाद तुम्हें फिर सूरज चाचा के साथ इसी यात्रा पर निकलना है और प्यासे लोगों व प्यासी धरती की प्यास बुझाने का काम करना है और पानी प्यार से समुन्द्र की गोद में आराम करने लगा।

-वन्दना गुप्ता

की मां ने खिड़कियाँ बन्द कर दी थी।

'माँ, मुझे जल्दी से नाश्ता दे दो, मैं कमल के घर जाऊँगा, राहुल रसोई में पहुँचते ही बोला।

'आरती तो शाम को होगी। आराम से नाश्ता कर लो, तब जाना।' कहते हुए मां ने गरमागरम पराठा एक प्लेट में परोस दिया।

राहुल अचार से पराठा खाने लगा। उसी समय दरवाजे की घंटी बजी।

'इस वक्त कौन आ गया?' तवा उतार कर एक तरफ रखते हुए मां बोली, 'गिलास में दूध रखा है इसे पी लेना। मैं देखती हूँ, बाहर कौन है।'

मां के जाते ही राहुल ने जल्दी से पराठा खा लिया

साहस और बुद्धिमानी

राहुल ने स्कूल से आकर रोज की तरह अपनी कापी किताबें अलमारी में रखी। कपड़े बदल कर हाथ मुँह धोया और रसोई में नाश्ता करने पहुँच गया।

राहुल केवल नौ साल का था। परन्तु वह अपना हर काम स्वयं ही करता। माता पिता ही नहीं, पास पड़ोस के लोग भी उसे पसंद करते।

पड़ोस में कमल के घर कीर्तन था। जिसके कारण काफी तेज स्वर में लाउडस्पीकर बज रहा था। शोर से बचने के लिए राहुल और गिलास में रखा दूध भी पी गया। मां अभी तक नहीं आई थी।

उसी समय राहुल को बैठक के कमरे से आवाज सुनाई पड़ी। वहां उपस्थित लोग उसकी मां से जोर जोर से बातें कर रहे थे। कौन हो

सकता है ? ऐसा सोचता हुआ राहुल बैठक में आ गया । कमरे में पहुँचते ही वहां का दृश्य देख कर वह भय से कांप उठा ।

बैठक में दो बदमाश मौजूद थे । उनमें एक हाथ में खुला चाकू लेकर मां को धमका रहा था । 'जल्दी से गहनें और रूपये मेरे हवाले कर दो, वरना चाकू से गर्दन कलम कर दूंगा ।'

राहुल समझ गया कि मां ने जैसे ही दरवाजा खोला होगा, दोनों बदमाश अंदर घुस आयें होंगे । वह सोचने लगा कि ऐसे में शोर मचाना उचित नहीं होगा । कारण बाहर लाउडस्पीकर के शोर में कोई भी उसकी आवाज नहीं सुन पायेगा शायद यही सोच कर बदमाश उसके घर में घुस आये थे । फिर उनके हाथ में खुला चाकू था शोर मचाने पर खतरा भी कर सकते थे ।

राहुल चुपके से घर के बाहर निकलना चाहता था कि एक बदमाश फुर्ती से आया और सख्ती से उसका हाथ पकड़ लिया । हाथ में चाकू लहराता हुआ, मां से कड़क कर बोला, 'अब तुम्हारा लड़का मेरे गिरफ्त में आ गया है । जल्दी से माल न निकाला तो चाकू से इसका काम तमाम कर दूंगा ।'

'नहीं नहीं मेरे बेटे को कुछ भी मत करना । मैं रूपये और गहने सब दे दूंगी ।' मां रूआंसी होकर बोली थी ।

'ठीक है जल्दी से माल हमारे हवाले कर दो । हम तुम्हारे बेटे को कुछ भी क्षति न पहुँचाएगें ।' एक बदमाश बोला ।

विवश होकर मां कमरे में मौजूद अलमारी खोलने लगी थी दूसरी तरफ राहुल इस मुसीबत से बचने का उपाय सोच रहा था । मां ने अभी अलमारी खोली भी न थी कि एकाएक राहुल भोलेपन से बोला, 'मां, रूपये और गहने तो बगल वाले कमरे की अलमारी में रखती हो । फिर इसे क्यों खोल रही हो ?'

इतना सुनते ही दोनों बदमाशों की आंखों में चमक आ गई । राहुल को मुक्त कर उस बदमाश ने शीघ्रता से मां के हाथ से चाभी का गुच्छा छीना । फिर दोनों बदमाश तेजी से बगल के

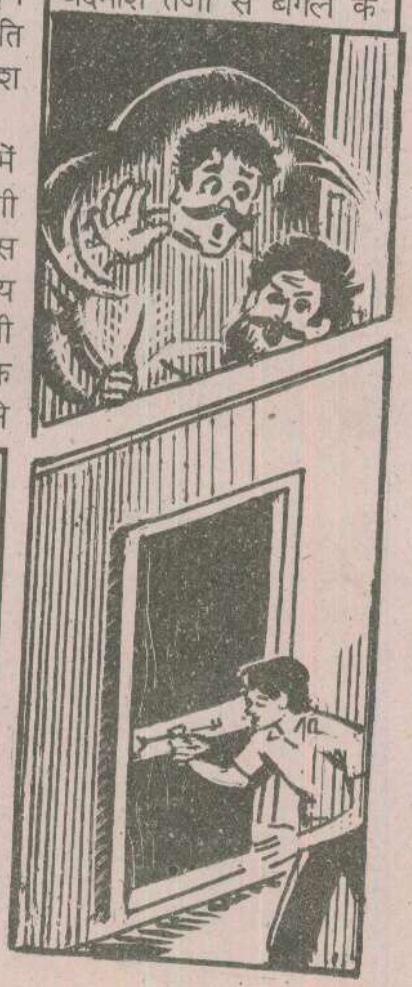

जैसे काटा हुआ चन्दन का वृक्ष सुगन्ध नहीं छोड़ता, कोल्हू में पेरी हुई ईख (गन्ना) अपनी मधुरता नहीं छोड़ती, उसी प्रकार दरिद्रता हो जाने पर भी कुलीन व्यक्ति शालीनता और सुशीलता नहीं छोड़ता ।

-अज्ञात

कमरे में घुस गए।

'मां जल्दी से कमरे के बाहर निकलो।' राहुल मां को घसीटता हुआ बोला

मां के साथ बाहर आकर राहुल ने झट बाहर से दरवाजा बन्द कर दिया। अब दोनों बदमाश अन्दर बन्द हो गए थे। माँ जहाँ घबराई हुई थी, वहीं राहुल विवेक से काम ले रहा था। राहुल दौड़ कर पड़ोस में कमल के घर गया और बहुत से लोगों को बुला लाया।

दोनों बदमाश घर में खुद को कैद पा कर बौखला गए। दरवाजा बाहर से बन्द था, इसलिए खिड़की खोली घर के बाहर भीड़ देखकर दोनों अंदर ही दुबक गए। इसी बीच किसी ने फोन द्वारा पुलिस को सूचना दे दी थी।

थोड़ी देर बाद पुलिस ने आकर दोनों बदमाशों को घर दबोचा था। जब लोगों ने पूरे घटना क्रम को मां के द्वारा सुना तो राहुल की प्रशंसा किये बिना न रहे। सचमुच नन्हें से राहुल ने अपने विवेक और साहस के बल पर दो शातिर बदमाशों को पकड़वा दिया था।

-सुमन 'सौरभ'

kissekahani.com

"दो किशोरायु बच्चे चाकलेट के सहारे ज़िंदा हैं"

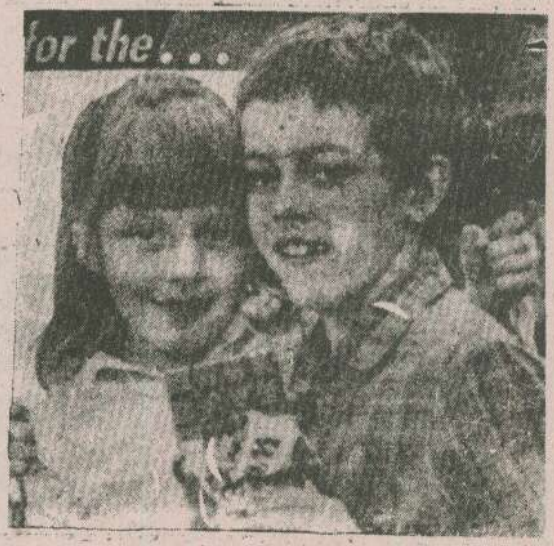

टम्सबरी, इंगलैंड में दो किशोरायु, बच्चे चाकलेट के सहारे जिंदा हैं । यदि उन्हें तीन घंटे तक चाकलेट या कोई दूसरी स्वीट न मिले, तो वे तत्काल मर सकते हैं । ब्यौरे के अनुसार 8 वर्षीय चार्लिस और उसकी पांच वर्षीय बहन सोफिया को एक ऐसा रोग हो गया है, जिसके कारण शरीर में शूगर बनाने वाले स्नायुओं ने काम करना छोड़ दिया है । अतः उन दोनों बच्चों को जिंदा रखने के लिए आवश्यक है कि उन्हें हर तीन घंटे में कोई न कोई मीठी चीज खिलाई जाये या उन्हें मीठा शर्बत पिलाया जाये । यदि नित्यनियम में कुछ मिनट की भी देर हो जाए, तो दोनों बच्चे 'कामा' अचेतावस्था में चले जाते हैं और उनकी जिन्दगी को खतरा हो जाता है । फिलहाल डाक्टरों के पास इस विचित्र बीमारी का कोई इलाज नहीं । बच्चों की मां हर समय अपने पर्स में चाकलेट और स्वीट्स रखती है, ताकि निश्चित समय में जरा सी भी देर न होने पाये । हर समय चाकलेट और मीठी चीजें खाने के कारण बच्चों के दांत तेजी से खराब होते जा रहे हैं, लेकिन डैंगेटिस्ट उन्हें मीठा खाने से नहीं रोक सकते, क्योंकि इस अवस्था में वे मर जायेंगी

-सुरजीत

वर्षा की फुहार

छम छम छम वर्षा आई
बागों में बहारें लाई
खेतों में हरियाली छाई
वर्षा देख कलियाँ
मुस्काई
फूलों ने खुशबू फैलाई
छम छम छम वर्षा आई।
पक्षी चहक रहे है भाई
मोरों ने भी ली अंगड़ाई
छम छम छम वर्षा आई।
मेंढक की है हुई सगाई
मेंढकी छाता दहेज में
लाई
छम छम छम वर्षा आई।

-सुमन

बादल चाचा हमें बताओ

बादल चाचा
हमें बताओ
क्यूं इतना
तड़पाते हो।
मई जून के
गरम महीने
सूखे खेत
नदी तालाब
लेकिन पास न
आते हो
गुस्सा इतना
नाक पे रखते
और आते ही
दिखलाते हो
घर आंगन
खेत खलिहान
सब बहा
ले जाते हो।
चारों तरफ
तुम्हारा पानी
हमको याद
दिलाता नानी
क्यूं इतना
बरसाते हो।
बादल चाचा
अगले साल
ठीक समय
तुम आ जाना
जहाँ जरूरत
हो जितना
बस उतना
ही बरसाना।

-विजय कुमार
बजाज

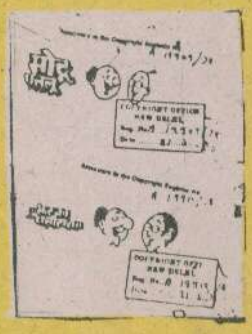

गंगा

kissekahani.com

○ कहानी :- लवकुश सहाय ○ चित्रांकन : हरविन्द्र मांकड़

कुछ कर न मोटू.. मेरी आखों के आगे पकवान घूम रहे हैं। यम.. यम..
आयडिया! यतीले, हमारे सामने भी पकवानों, फलों और मिठाईयों के ढेर लग सकते हैं।
कैसे?
क्यूं न हम भी नकली दाढ़ी-मूंछ लगाकर साधू बन जायें?
आयडिया तो अच्छा है। हमें यहां सभी लोग अच्छी तरह पहचानते हैं।
हम यहां पर ऐसा गुल खिलायेंगे ही नहीं। हम यह सारा ढोंग यमुनापार के इलाके में करेंगे।
?
!!
वो मारा 6S. फिर तो हमारे कष्ट दूर हो गये।

सुना तूने झटके.. यह दोनों हमारे बगैर अकेले ही मलाई खाने का इरादा रखते हैं।
इसकी सजा इन्हें मिलनी चाहिए। कल देखना तमाशा।
अगले दिन-
यमुनापार में हिमालय पर्वत से महाराज जी पधारें हैं।
हमारा स्वागत करो वर्ना सबको शाप दे देंगे।
थोड़ा जुबान को लगाम दे मोटे.. वर्ना फ्री फण्ड में पिटवायेगा।
अच्छा- अच्छा.. तू चेला है तो चेले की औकात में रह..
महाराज, हमारी तरफ से तुच्छ भेंट स्वीकार करें।
वैरी गुड.. वैरी गुड.. जल्दी से अपनी तुच्छ भेंटे लाओ.. HURRY UP..
?

kissekahani.com

वो कैसे?
अभी पता लग जायेगा महाराज।
महाराजSS.. अपने भक्त की निराशा मत कीजिए। दया कीजिए..
?
बड़ी दूर से चलकर आये हैं। एक बाल और दे दीजिए
क्या बक रहे हो नालायको ?
आपकी दादी के एक बाल ने लखपति बना दिया थाSS
बाल क्या खोया.. हम बर्बाद हो गयेSS
?
!!
यह बालों की क्या पहेली है भाई साहब?
इनकी करामाती दादी के बाल की जितनी तारीफ की जाये कम है।
जिसके पास बाल होगा उसके घर माया ही माया हो जायेगी।

हम गरीब थे पर अब मोर्या में ए.सी. रूम में रहते हैं।
फिर तो-
अरेरे... क्या कर रहे हो ?
मत करो भाई
लाईन से आओ भई.
राशन कार्ड लाए हो क्याss
पीछे हट ओय.
एक बाल मुझे.. मेरा सीरियल अधूरा पड़ा है।
मेरा मकान आधा बन कर रूका पड़ा है.. आठ-दस बाल चाहिए मुझे तो।
निकल चलो।
मैं तो ब्लैक करूंगा.. पांच सौ का एक बाल..
अपना काम हो गया।

अयं!
नकली दाढ़ी?
यानि ढोंगी साधू हैं यह?
जूते मार-मार कर अधमरा कर दो..
यह दोनों भी इन बदमाशों के एजेण्ट हैं।
तभी तो करामाती बाल का ड्रामा कर रहे थे।
भाइयो, इन्हें दिखा दो यमुनापार वालों को धोखा देने का क्या नतीजा होता है। टूट पड़ो ऽऽ
फिर तो-
हायऽऽ मर गया
उईई.. धाड़ .. तड़क
हायऽऽ बसऽऽ
ठाक.. ढिशुमऽऽ

kissekahani.com

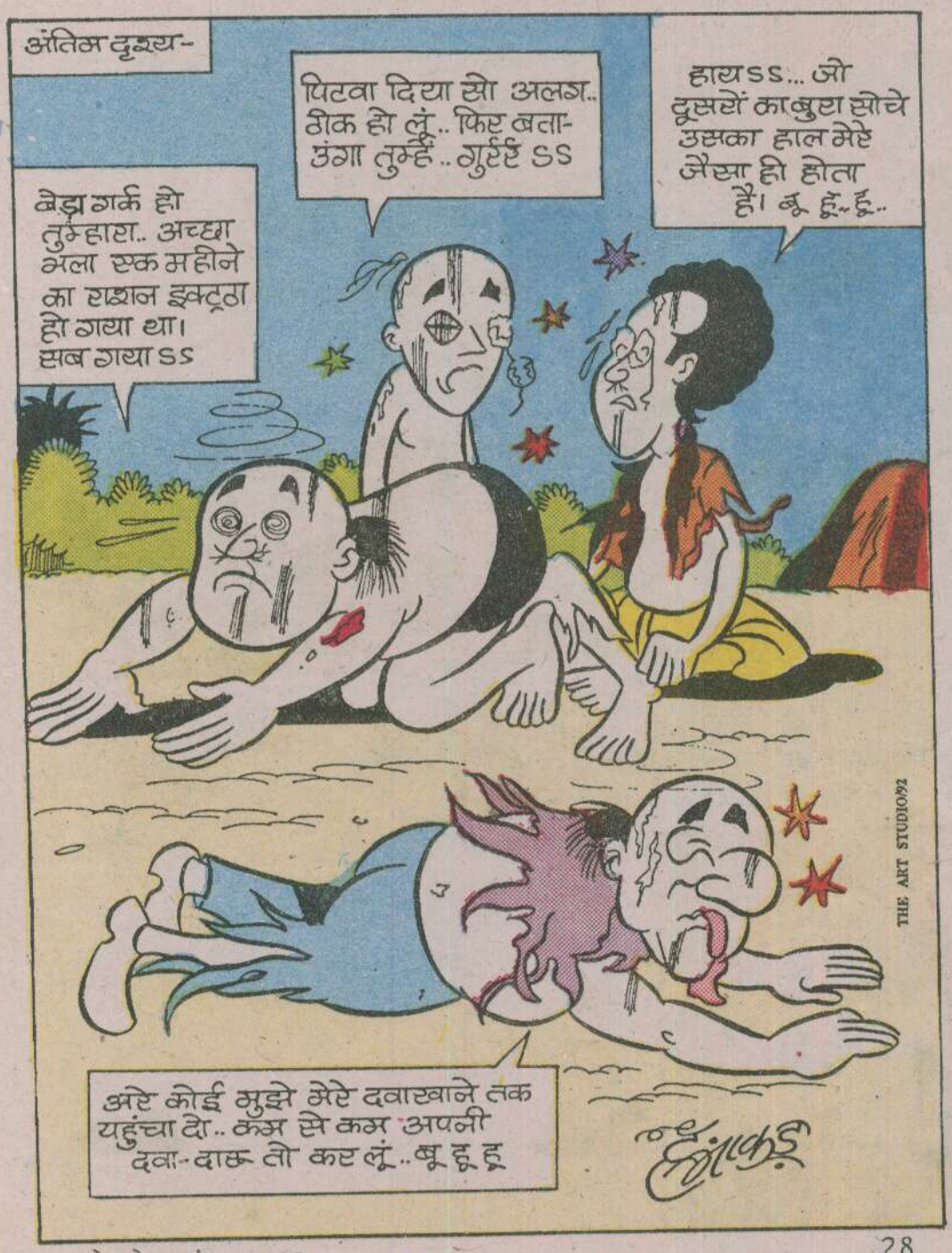

मददगार

मूसलाधार वर्षा हो रही थी। चारों तरफ पानी ही पानी था किट्टू नेवले के बिल में पानी भर गया था। किट्टू ने बिल से निकल कर चारों तरफ देखा, चारों ओर से पानी का समुन्द्र घिर आया था।

अपने अपने घोंसलें में दुबक गयी थी।

पेड़ के पास वाली एक शाखा में मिन्नी मैना का घर था। मिन्नी घर के दरवाजे पर खड़ी मूसलाधार वर्षा का नजारा देख रही थी।

तभी किट्टू मिन्नी के पास

'ऐसा मत कहो बहन। वर्षा थमते ही मैं दूसरे पेड़ पर चला जाऊँगा। पेड़ के नीचे अब पानी भरने लगा है। डर लगता है कहीं डूब न जाऊँ' किट्टू ने बेबसी से आग्रह किया।

'नहीं, नहीं। घर में जगह नहीं है। मेरे बच्चे सो रहे हैं। भागो वरना मेरे बच्चे तुम्हें देख कर डर जायेंगे।

किट्टू की सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी। अपनी जान बचाने के लिए किट्टू को कुछ भी सूझ नहीं रहा था। आखिर उसे एक पेड़ दिखाई पड़ा। जान बचाने के लिए किट्टू पेड़ पर चढ़ गया।

पेड़ की ऊँची शाखाओं में चिड़ियों का बसेरा था। मूसलाधार वर्षा में चिड़ियें

पहुँचा। 'बहन मेरी जरा मदद करो। अपने घर में मुझे शरण दे दो। मेरे घर में पानी भर गया है।' किट्टू मिन्नी के पास गिडगिड़ाने लगा।

स्वभाव से मिन्नी बड़ी पत्थर दिल की थी। अतः निष्ठुरता से मिन्नी ने किट्टू को झिड़क दिया 'चल हट ? कहीं और रास्ता देख ?'

आंखें तरेर कर मिन्नी ने फिर झिड़की सुना दी।

फिर भी किट्टू ढिठाई से मिन्नी के पास खड़ा था मिन्नी को बड़ा क्षोभ लगा। 'भागता है कि नहीं ? पड़ोसिनों को बुलाऊँ ?' मिन्नी ने तेज स्वर में कहा।

किट्टू सहम गया। उसने मन में सोचा, सचमुच

चिड़ियें मिल कर यदि पंजों से उस पर वार करने लगें तो वह पेड़ के नीचे पानी में गिर जायेगा।

इसे सोचकर किट्टू धड़ के पास सरक गया।

पेड़ की धड़ में शिखी कठफोड़ा का खोडर था। शिखी दरवाजे पर खड़ी मिन्नी को झिड़कियाँ सुना रही थी।

किट्टू को भीगा और ठण्ड से कांपता देख शिखी पसीज गयी। 'भइया, आइये मैं शरण देती हूँ।'

आग्रह सुन कर किट्टू शिखी के घर के भीतर घुस गया। पानी से किट्टू का शरीर तर हो चुका था। शिखी ने शरीर पोंछने के लिए सूखे कपड़े दे दिए। सूखे कपड़े से किट्टू अपना शरीर पोंछ कर सुखाने लगा।

तब तक शिखी गरम गरम चाय बना कर ले आयी 'लो भाइया, चाय पी लो। ठण्ड दूर हो जायेगी।'

'बहुत बहुत धन्यवाद बहन। वाकई तुम बहुत मददगार हो।' चाय पीकर किट्टू ने कहा।

'भइया, मुसीबत के समय शरण में आये बेबसों की मदद करना मैं धर्म समझती हूँ। जब तक तुम्हारे घर का पानी सूख नहीं जायेगा, तब तक मैं तुम्हें कहीं जाने नहीं दूँगी।' शिखी ने अपनापन जता कर कहा।

तभी पेड़ की शाखा में मिन्नी का शोर सुनाई पड़ा। 'बचाओ बचाओ'

मिन्नी के साथ साथ दूसरी चिडियें भी तेज शोर मचाने लगी।

'बहन, किसका शोर सुनाई पड़ रहा है' हतप्रभ रह कर किट्टू ने पूछा।

'मिन्नी शोर मचा रही है। देखूं ?' शिखी घर से निकल पड़ी।

सचमुच पेड़ की शाखा पर बैठी मिन्नी रो रही थी। पड़ोसिनें चिल्ला पुकार रही थी।

किल्लू सांप ने मिन्नी के घर में हमला बोल दिया था। मिन्नी के बच्चे घर के अन्दर मौत के डर से रो रहे थे।

'भइया, गजब हो गया किल्लू ने मिन्नी के बच्चों को शायद दबोच डाला है। यहाँ हमें किल्लू का डर हमेशा बना रहता है।' बेतहाशा शिखी बोली।

किल्लू तो क्या, किल्लू

की बिरादरी से किट्टू की दुश्मनी थी। दुश्मनी आज से नहीं, जन्म जन्म से थी। पर किट्टू की बिरादरी से किल्लू की बिरादरी कभी जीत नहीं सकी।

किल्लू की बात सुनकर किट्टू का खून गरम हो गया। 'देखता हूँ। कौन किल्लू है?' दांत पीसता हुआ किट्टू बोला।

'भइया, एक बात, जिसने तुम्हें शरण नहीं दी, उसकी तुम मदद करोगे ?' शिखी ने टोका।

'बहन, तुम भी अपने चरित्र को फीका मत बनाओं अभी अभी तुमने कहा था न? मुसीबत में मदद करना हर किसी का कर्तव्य है।' किट्टू बोला।

शिखी का सिर झुक गया। किट्टू पेड़की शाखा पर चढ़ गया। वाकई किल्लू मिन्नी के घर में घुस उसके बच्चों को मार डालने की कोशिश कर रहा था।

किट्टू की शक्ल देखते ही किल्लू की अक्ल चक्कराने लगी। उसे अपने सिर पर मौत मंडराते दिखाई पड़ी।

'निकल ! वरना टुकड़े

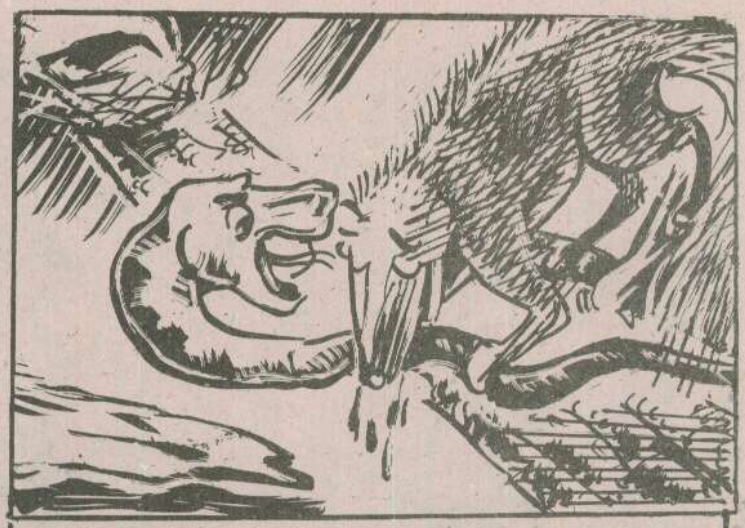

टुकड़े कर दूंगा। 'किट्टू ने बाहर से आवाज दी।

हड़बड़ा का किल्लू मिन्नी के घर से निकल पड़ा। गुस्से से किट्टू ने किल्लू को दो तीन जगह अपने दांतों से काट लिया।

दर्द से किल्लू छटपटाने लगा। छटपटाहट से पेड़ की पकड़ ढीली पड़ गयी। और वह पेड़ के नीचे पानी में छपाक की आवाज के साथ गिरा।

तभी मिन्नी की पडोसिनें किट्टू के इर्द गिर्द इक्ट्ठी हो गई। सेटू तोता ने धन्यवाद देते हुए किट्टू से कहा 'आज इसे सबक मिल गया। दोबारा और कभी नहीं आयेगा। अच्छा हुआ समय पर तुम आ गए। वरना मिन्नी के बच्चे खतरे में पड़ जाते।'

बारी बारी से पेड़ पर रहने वाली चिड़ियों ने किट्टू को धन्यवाद दिया। पर मिन्नी ग्लानि में डूब गई थी। जिसे वह शरण दे नहीं सकी, उसे वह किस मुँह से धन्यवाद देती भला ?

ग्लानि में डूब कर मिन्नी बोली 'किट्टू भइया मुझे माफ कर दीजिए,. मेरी मदद करके आपने मेरी आँखें खोल दी। आपसे नसीहत मिल गयी कि हमें हर मुसीबत में एक दूसरे की मदद करनी चाहिए।'

-चैतन्य

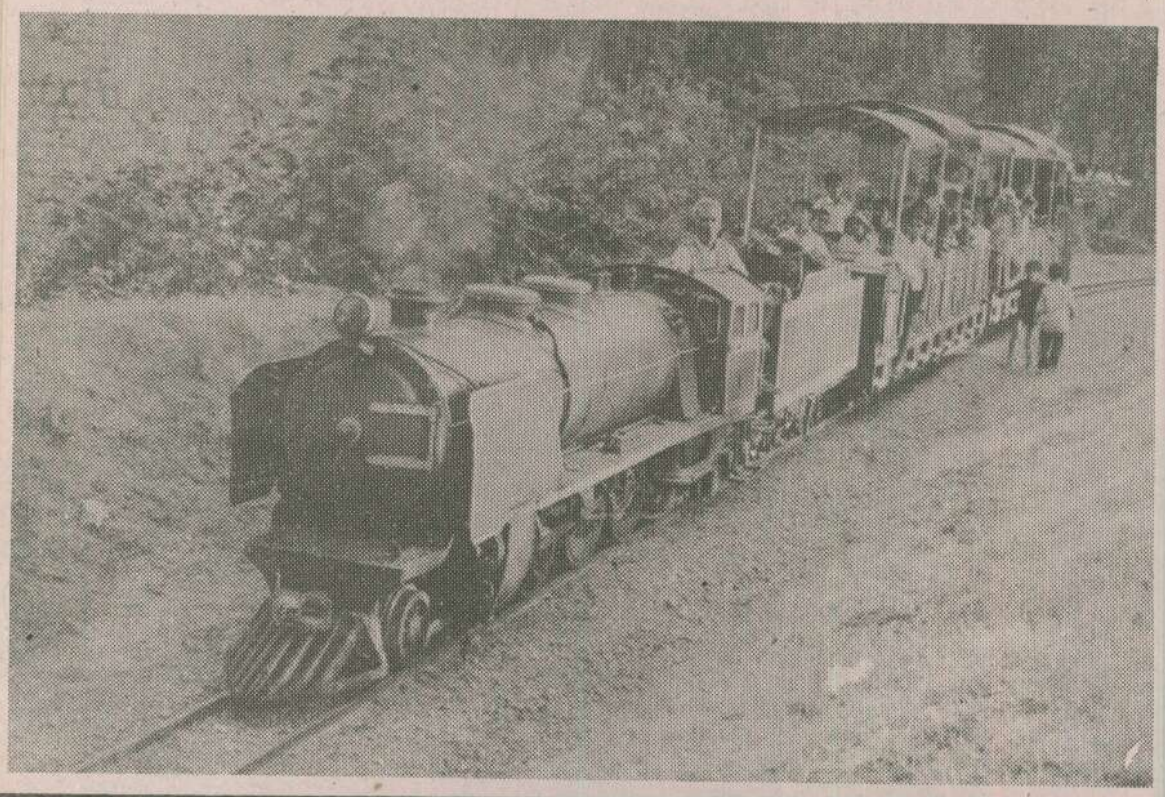

बाल भवन की मिनी ट्रेन

रेलगाड़ी का नाम लेते ही बच्चों के मन में अचानक ही उमंग और तरंग फैल जाती है । छक छक करती धुआं उगलती रेलगाड़ी में बैठ यात्रा करने का आनंद ही अलग होता है बच्चों के लिए । यों आजकल तो डीजल और बिजली के इंजनों वाली रेलगाड़ियों की संख्या अधिक है लेकिन जो मजा बच्चों को भाप के इंजन वाली गाड़ी में आता है वह दूसरों में कहाँ ?

नई दिल्ली स्थित बालभवन में एक मिनी रेलगाड़ी है जो भाप के इंजन द्वारा ही खींची जाती है । बच्चों की इस रेलगाड़ी में दो डिब्बे है तथा इसमें 51 सवारियाँ बैठ सकती हैं । हरे रंग का इंजन जब सीटी बजाता धुआं उगलता, धड़-धड़-धड़ का शोर करता बाल भवन के भीतर ही भीतर लगभग एक किलोमीटर और आठ मीटर की यात्रा बच्चों को कराता है तो उनके आनंद की सीमा नहीं रहती । इस रेलगाड़ी के इंजन का वजन सवा आठ टन है तथा जिस पटरी पर

यह दौड़ती है उसकी चौड़ाई दो फुट है।

वास्तव में यह रेलगाड़ी एक ऐतिहासिक रेलगाड़ी है। बात काफी पुरानी है। 1950 में जब भारत के प्रथम प्रधान मंत्री जर्मनी की यात्रा पर गये तो उन्हें अनेकों उपहारों के अतिरिक्त यह रेलगाड़ी भी उपहार में मिली। उस समय तो उन्हें समझ नहीं आया कि इसका वे क्या करेंगे। लेकिन उन्होंने उस गाड़ी को उत्तर रेलवे को देख रेख के लिए सौंप दी। फिर सन 1958 में यह रेलगाड़ी बालभवन को सौंप दी। तब से ही इस गाड़ी में अनेकों महान व्यक्तियों ने यात्रा की जिससे यह एक एतिहासिक गाड़ी बन गई। बच्चों के लिए उसे बालभवन में चलाये जाने के लिए इस रेलगाड़ी का उदघाटन उस समय के रेलमंत्री बाबू जगजीवन राम ने किया और इसमें सहर्ष यात्रा की। इस प्रकार इस गाड़ी में यात्रा करने वाले वे प्रथम विशिष्ट व्यक्ति हो गये।

उदघाटन के तीन दिन पश्चात , प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने अपने जन्मदिवस 14 नवम्बर 1958 को अनेकों बच्चों के साथ इसी गाड़ी में यात्रा की। फिर तो इसके अति विशिष्ट यात्रियों की संख्या बढ़ती ही गई। देश के महान नेताओं से लेकर विदेशी मेहमानों ने भी इस गाड़ी में यात्रा की। इसमें श्रीलाल बहादुर शास्त्री, श्रीमती इंदिरा गांधी, श्री चन्द्रशेखर तथा श्री राजीव गांधी ने भी यात्रा की। हमारे दो राष्ट्रपतियों डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन एवं श्री आर. वेंकटरमण ने भी इस रेलगाड़ी में यात्रा की। यह रेलगाड़ी पिछले 32 वर्षो से शान से चल रही है और बच्चों के लिए इस गाड़ी के प्रति बहुत आकर्षण है।

इस रेलगाड़ी के ड्राईवर हीरापाल पिछले 32 वर्षो से इसे चला रहे हैं। उनका कहना है कि उन्हें गर्व है कि उन्होंने इस दौरान हजारों बच्चों के अतिरिक्त अति विशिष्ट व्यक्तियों को भी इस गाड़ी में घुमाया है।

प्रारम्भ में दिल्ली में बच्चों की छोटी सी एवं आकर्षक गाड़ी एक ही थी। अब तो अनेकों मिनी गाड़ियाँ देश भर में हैं। लेकिन बाल भवन की रेलगाड़ी के प्रति बच्चों का आज भी वही आकर्षण है।

बालभवन की इस गाड़ी में किवंटल से जरा अधिक कोयला रोजाना खर्च होता है

बाल भवन के भीतर का पूरा चक्कर यह 4 से 6 मिनट में पूरा कर लेती है। जहाँ से बच्चे इस रेलगाड़ी में सवार होते हैं। उसे बच्चों का आकर्षक रेलवे स्टेशन बनाया गया है जिसका नाम 'खेलगांव रेलवे स्टेशन' है। यह नाम स्वर्गीय प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी का दिया हुआ है। वे बाल भवन की प्रथम अध्यक्ष थी।

इस 'मिनी ट्रेन' के गुजरने के मार्ग में एक गुफा, तालाब पर बना एक पुल तथा एक ओवर ब्रिज आता है। इस रेलगाड़ी की देख रेख का उत्तरदायित्त्व उत्तर रेलवे संभालता है।

-श्रीमती निधी

जहां नदी गहरी होती है वहां जलप्रवाह अत्यन्त शान्त व गम्भीर होता है अर्थात बुद्धिमान और सुसभ्य लोग कम बोलते हैं

-शेक्सपियर

kissekahani.com

वरदान

विख्यात संत इमाम गिजाली धर्मग्रन्थ के अध्ययन में पूरी रात बिता देते थे । उनके पास रात रात भर एक नन्हा सा दीपक जलता रहता था । एक दिन पढ़ते पढ़ते झपकी लग गयी । स्वप्न में उन्होंने देखा कि एक देवदूत आया है और कहता है, गिजाली उठ ! मैं तुझे सम्पूर्ण विद्याएं सिखाने आया हूँ । इसके बाद तुझे रात भर जागना नहीं पड़ेगा,'

दूसरा कोई होता तो खुश हो जाता, किन्तु स्वप्न में ही गिजाली ने कहा "ख्वाजा साहब । बेअदबी माफ करें, परिश्रम के किये बिना पुरस्कार मुझे नही चाहिए । सब विद्याएं पढने सीखने जितनी शक्ति सामर्थ्य मुझमें है भी नहीं । पुरूषार्थ के बिना मिली सिद्धि मुझे नगण्य लगती है । मुझे तो इन ग्रन्थों को पढ़कर धीरे धीरे जो ज्ञान मिले, वही पाना है । वह ज्ञान मेरा अपना होगा ।' तब तुम्हारे मन में जो आए मांग लो ।' देवदूत ने कहा ।

गिजाली बोले, 'आप ऐसे ही प्रसन्न हैं तो यह कीजिए कि मेरे इस दीपक की रोशनी और मेरे भीतर की रोशनी कभी घटे नहीं । जिससे मेरी साधना कभी शिथिल न पड़े ।

-कमला गर्ग

समाचार

औसत आयु 65 वर्ष

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार अब लोगों की औसत आयु 65 वर्ष हो गई है और उससे भी अधिक बढ़ रही है। बेहतर जल आपूर्ति, शिशु मृत्यु दर में कमी तथा सरकार द्वारा स्वास्थ्य पर अधिक खर्च के कारण आयु बढ़ रही है। अगले 5 वर्ष में औसत आयु में चार महीने की वृद्धि होने की सम्भावना है किन्तु बीमार लोगों की संख्या भी बढने का अनुमान है।

विश्व में लोगों की औसत आयु बढ गई है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि स्वास्थ्य की दृष्टि से उनका जीवन बेहतर है।

आम के अन्दर छिपकली

जिन्हें वह बदगुमानी थी कि आम के आम और गुठलियों के दाम होते है, आमों को जरा सम्भाल कर काटें।

ढाका के निकटवर्ती कस्बे नारायण गंज में रहीम मुल्ला नामक रिक्शा चालक ने अपनी पसीने की कमाई के पैसे से चार आम खरीदें। घर पर उनमें से एक आम के काटे जाने पर उसने जिन्दा छिपकली को उसमें बिल बिलाते देखा तो उसके होश फाख्ता हो गए। रहीम मुल्ला के हाथों से चाकू छटक कर कहीं और आम कहीं और जा गिरा। बस्ती में यह विषय चर्चा का बन गया नजारा देखने उसके घर पर लोग उमड़ पड़े।

चिम्पाजी सर्कस को लौटाने का आदेश

उच्चतम न्यायालय ने सीमा शुल्क अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वर्ष 1989 में जायरे से भारत लाया गया चिम्पाजी जम्बो सर्कस को लौटाया जाऐ। सीमा शुल्क

अधिकारियों द्वारा कब्जे में लिया गया चिम्पाजी दिल्ली के चिडियाघर में सुरक्षित रखा हुआ है।

अदालत ने आदेशानुसार सर्कस द्वारा एक सप्ताह में पूरा जुर्माना अदा करने पर सीमा शुल्क अधिकारियों को चिम्पाजी लौटाना होगा।

डा. नगेन्द्र को पुरस्कार

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने डा. नगेन्द्र को वर्ष 1992 का भारत भारती पुरस्कार देने का निश्चय किया है। डा. नगेन्द्र को पुरस्कार के रूप में एक लाख 51 हजार रूपए प्रदान किए जाऐंगे।

युद्ध विनाश विद्या का नाम है
–जॉन ए.सी. एबट

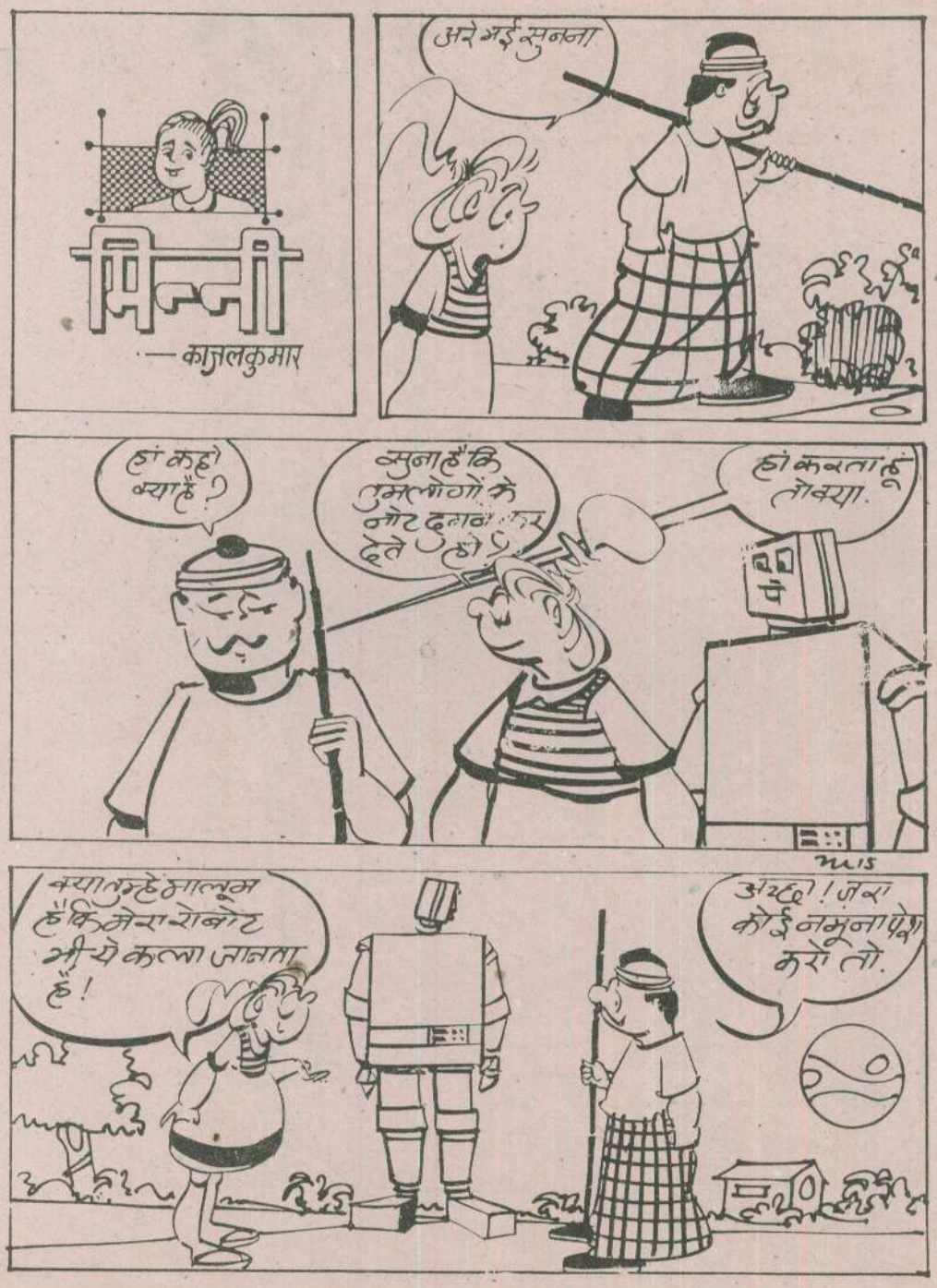
मिन्नी
— काजलकुमार
अरे भई सुनना
हां कहो क्या है ?
सुना है कि तुम लोगों के नोट दुगना कर देते हो ?
हां करता हूं तोबया.
क्या तुम्हें मालूम है कि मेरा रोबोट भी ये कला जानता है !
अरे वाह ! ज़रा कोई नमूना पेश करो तो.

रोबोट, इसके लट्टू को होलट्टू में बदलो
देखा! एक के दो हो गए न!
तड़ाक
चलो आओ अब इस जालसाज को सिंगल बनाने के लिए थाने ले चलें

सयाना कौन

एक दिन बातों बातों में राजा कृष्णदेव राय ने तेनाली राम से कहा, 'अच्छा यह बताओ कि किस प्रकार के लोग सबसे अधिक मूर्ख होते हैं और किस प्रकार के अधिक सयाने ?

तेनालीराम ने झट उत्तर दिया, 'महाराज, ब्राहमण सबसे अधिक मूर्ख और व्यापारी सबसे अधिक सयाने होते हैं।'

'ऐसा कैसे हो सकता है तेनालीराम ? ब्राहमण तो पढ़े लिखे और विद्वान होते है और व्यापारी निरे अनपढ़' राजा ने कही।

'मैं यह बात साबित कर सकता हूँ। तेनालीराम ने कहा।

'कैसे ?' राजा ने पूछा।

'अभी आप जान जाएंगे। जरा राजगुरू को बुलवाइए।

राजगुरू को बुलवाया गया तेनाली राम ने कहा, 'महाराज, अब मैं अपनी बात साबित करूंगा, लेकिन मेरी प्रार्थना है कि इस काम में आप दखल नहीं देंगे आप यह वचन दें, तभी मैं अपना काम आरंभ करूँगा।'

राजा कृष्णदेव राय ने तेनालीराम की बात मान ली।

तेनालीराम ने आदरपूर्वक राजगुरू से कहा, राजगुरूजी, महाराज को आपकी चोटी की आवश्यकता है। इसके बदले में आपको मुंह मांगा इनाम दिया जाएगा।'

राजगुरू को काटो तो खून नहीं वर्षो से पाली प्यारी चोटी को कैसे कटवा दें ? लेकिन राजा की आज्ञा थी टाली भी कैसे जा सकती थी।

उसने कहा, 'तेनालीराम जी मैंने बड़े जतन से अपनी इस चोटी को पाला है। मैं इसे कैसे दे सकता हूँ ?'

राजगुरू जी आपने जीवन भर महाराज का नमक खाया है। चोटी तो कोई ऐसी वस्तु तो नहीं है, जो फिर न आ सके। फिर महाराज मुँहमांगा इनाम भी दे रहे हैं। चाहे तो आपसे सब कुछ छीन भी सकते हैं। लेकिन हमारे महाराज न्यायप्रिय है। और

kissekahani.com

ऐसा कुछ नहीं करना चाहते। जिससे आपकी हानि हो।'

राजगुरू मन ही मन समझ गया कि यह तेनालीराम की चाल है।

तेनालीराम ने पूछा, राजगुरूजी, आपको चोटी के बदले क्या इनाम चाहिए?'

राजगुरू ने धीरे से कहा, 'पांच स्वर्ण मुद्राएं बहुत होंगी।'

पांच स्वर्ण मुद्राएं राजगुरू को दे दी गई और नाई को बुलवाकर राजगुरू की चोटी कटवा दी गई। अब तेनालीराम ने नगर के सबसे प्रसिद्ध व्यापारी को बुलवाया उसकी भी बहुत बड़ी चोटी थी।

तेनालीराम ने व्यापारी से कहा, 'सेठ जी, तुम्हारी चोटी की महाराज को आवश्यकता है।'

'सब कुछ महाराज का ही तो है। जब चाहे ले लें लेकिन बस इतना ध्यान रखें कि मैं एक गरीब आदमी हूँ।' व्यापारी ने कहा।

'तुम्हें तुम्हारी चोटी की मुंहमांगी कीमत दी जाएगी।' तेनालीराम ने कहा।

'सब आपकी कृपा है लेकिन..?' व्यापारी ने कहा।

'लेकिन लेकिन क्या? क्या कहना चाहते हो तुम?' तेनालीराम ने पूछा।

'जी बात यह है कि जब मैंने अपनी बेटी का विवाह किया था, तो अपनी इसी चोटी की लाज रखने के लिए मैंने पूरी पांच हजार स्वर्ण मुद्राएं खर्च की थी। पिछले साल मेरे पिता की मौत हुई तब भी इसी के कारण पांच हजार स्वर्ण मुद्राओं का खर्च हुआ और अपनी इसी प्यारी दुलारी चोटी के कारण बाजार में कम से कम पांच हजार स्वर्ण मुद्राओं का उधार मिल सकता है। बड़ी बेशकीमती चोटी है यह।' अपनी चोटी पर हाथ फेरते हुए व्यापारी ने कहा-

'इस तरह तुम्हारी चोटी का मूल्य पंद्रह हजार स्वर्ण मुद्राएं हुआ ठीक है यह मूल्य तुम्हें दे दिया जाएगा।' पंद्रह हजार स्वर्ण मुद्राएं व्यापारी को दे दी गई।

व्यापारी चोटी मुंडवाने बैठा जैसे ही नाई ने उसकी चोटी पर उस्तरा रखा व्यापारी

कड़ककर बोला, 'सभंलकर नाई के बच्चे ! जानता नहीं, अब यह महाराज कृष्णदेव राय की चोटी है।'

राजा ने सुना तो आग बबूला हो गए। इस व्यापारी की यह मजाल कि हमारा अपमान करे ? उन्होंने कहा धक्के मारकर निकाल दो इस सिरफिरे की।'

व्यापारी पंद्रह हजार स्वर्ण मुद्राओं की थैली लेकर वहां से भाग निकला।

कुछ देर बाद तेनालीराम ने कहा, 'आपने देखा महाराज, राजगुरू ने तो पांच स्वर्ण मुद्राएं लेकर अपनी चोटी मुंडवा ली। व्यापारी प्रदंह हजार स्वर्णमुद्राएं भी ले गया और चोटी भी बचा ली। आप ही कहिए ब्राहमण सयाना हुआ कि व्यापारी !'

राजा कृष्णदेवराय ने कहा, सचमुच तुम्हारी ही बात ठीक निकली।

-ज्ञानदेव रामचंद्र चौधरी

सच्चा दोस्त

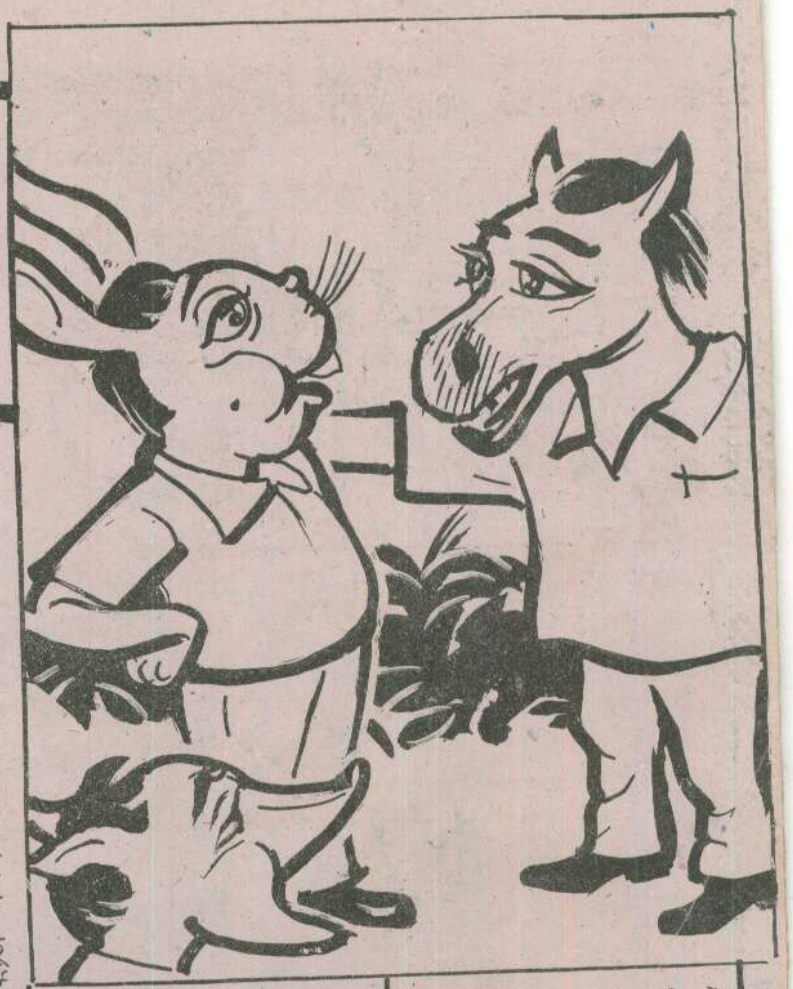

चीकू खरगोश और मीकू घोड़ा दोनों पक्के दोस्त थे। सारे जंगल में तो इनकी दोस्ती की चर्चा थी ही, पास पड़ोस के जंगल में भी इनके दोस्ती के कारनामे जोर शोर से फैले हुए थे। दोनों 'लोटपोट बाल विद्यालय, में कक्षा चार में पढते थे। विद्यालय में होने वाली वार्षिक सामान्य ज्ञान और दौड़ प्रतियोगिता में पिछले तीन वर्षो से चीकू और मीकू का फर्स्ट आने का रिकार्ड था। इस कारण विद्यालय के कई बच्चे इनसे जलतें थे। इनको नीचा दिखाने में आगे रहने वालों में कालू लोमड़ का पहला नम्बर था। कालू लोमड़ भी इन्हीं की कक्षा का छात्र था।

हमेशा की तरह इस बार भी 'लोटपोट बाल विद्यालय' में जून के अन्त में प्रतियोगिताएं होने वाली थी। चीकू मीकू सहित अनेकों बच्चों ने प्रतियोगिता संयोजक हाथी दादा के पास अपने अपने नाम लिखवा दिए थे। सभी बच्चे जोर शोर से अपनी अपनी तैयारी में जुटे हुए थे। कालू लोमड़ नहीं चाहता था कि इस बार भी चीकू मीकू जीतें इसलिए उसने अपने साथियों से मिलकर एक भयंकर योजना बनाई।

कालू लोमड़ अपने साथियों के साथ चीकू और मीकू को खोजने निकल पड़ा। मीकू तो मिला नहीं क्योंकि वह जंगल के बाहर एक मैदान में दौड़ का अभ्यास कर रहा था। चीकू को उन्होंने पास के एक बाग में 'ज्ञान प्रतियोगिता' तैयार करते देख लिया। बस फिर क्या था, सबने कर दी मिलकर उसकी जमके

पिटाई। सब लोग भाग गए बेचारे चीकू की टांग पर कई जख्म हो गए थे। जैसे तैसे घिसटते हुए वह अपने घर पहुँचा।

कल प्रतियोगिता का दिन था। चीकू बार बार यह सोच रहा था कि अब वह इसमें भाग कैसे लेगा ? सोचते सोंचते वह कब सो गया, पता नहीं।

सुबह हुई खिड़की के बाहर देख चीकू को खुद पर रोना आया। मिट्ठू तोता, रूबी बिल्ली, झबरू कुत्ता आदि सभी अपनी अपनी तैयारी करके विद्यालय को जा रहे थे। काश ! मैं चल पाता, चीकू की आंखों में आंसू आ गए थे।

आठ बज गए, विद्यालय में आज काफी धूम थी। मीकू घोडा इधर उधर अपने साथी चीकू को ढूंढ रहा था। पर वह कहीं नजर नहीं आया। बेचारा मीकू परेशान ! एक तो दौड़ प्रतियोगिता शुरू होने का वक्त आए जा रहा था। अपनी प्रतियोगिता का ध्यान न रखते हुए मीकू फटाफट चीकू के घर दौड़ लिया। मीकू को देख चीकू हैरान ! 'अरे ! आठ तीस पर तुम्हारी प्रतियोगिता है। फिर...?' बीच में ही मीकू बोल उठा 'हां, हां और आठ पैंतालिस पर तुम्हारी प्रतियोगिता भी तो है ? फिर तुम क्यों नहीं...?' देखो यार, मैं नहीं जा पाऊँगा, मेरे पैर में चोट है।'

'ओह ! तो ऐसा करो...तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ।' मीकू कुछ सोंचते हुए बोला।

'नहीं यार ! यह कैसे हो सकता है ? तुम मेरे दोस्त हो, एकदम सच्चे दोस्त...मैं तुम्हारी पीठ पर बैठूं..यह नहीं होगा न बाबा न !!'

'देखो, दोस्त वह होता है जो दोस्त के काम आए चलो जल्दी बैठो !'

मीकू की जिद के आगे चीकू को झुकना ही पड़ा। ग्लानिपूर्वक वह जैसे तैसे उसकी पीठ पर बैठ गया।

विद्यालय पहुँचने तक दौड़ प्रतियोगिता हो चुकी थी, ज्ञान प्रतियोगिता आरंभ होने में अभी कुछ समय था। अपने कारण मीकू की प्रतियोगिता छूटने पर चीकू बहुत दुःखी हुआ। चीकू को प्रतियोगिता पारी में बिठा मीकू एक ओर खड़ा हो गया।

प्रतियोगिता आरम्भ हो गई,

व्यक्ति का चेहरा कपड़ों की अपेक्षा भी अधिक मन की हालत बता देता है

-अज्ञात

लगभग चालीस मिनट तक प्रतियोगिता चली । इस बार भी चीकू फर्स्ट आया । जिलाधिकारी के द्वारा पुरस्कार वितरण हुआ, चीकू का नम्बर आया, मीकू ने उसे मंच तक पहुंचाया । जिलाधिकारी द्वारा शाबासी एवं पुरस्कार के प्रत्युत्तर में चीकू ने कहा 'सर ! इस पुरस्कार पर मेरा नहीं मेरे दोस्त मीकू का हक है, यदि वह मुझे यहां तक न लाता तो मैं यह प्रतियोगिता कैसे जीत सकता था ? मेरे कारण मीकू की अपनी दौड़ प्रतियोगिता छूट गई ।

संयोजक हाथी दादा ने मीकू को मंच पर बुलाया । 'शाबास ! बेटे शाबास !! तुम सचमुच महान हो । एकदम सच्चे दोस्त हो तुम । अपने दोस्त की खातिर तुमने अपनी प्रतियोगिता छोड़ दी । मैं तुम्हें 'लोटपोट बाल विद्यालय' की ओर से 'सर्वश्रेष्ठ मित्र' पुरस्कार दे रहा हूँ ।'

चीकू मीकू अपने पुरस्कार लेकर मंच से उतरे तो बधाई देने वालों की झड़ी सी लग गई । बधाई देने वालों में कालू लोमड़ भी था । वह अपने किए पर शर्मिन्दा होकर माफी मांगने लगा । चीकू ने उसे माफ कर दिया । दोनों हंसते हुए आगे बढ़ गए ।

-नागेश पांडेय 'संजय'

लोटपोट मित्र-सभा

इस स्तंभ का सदस्य बनने व अपना चित्र छपवाने के लिए अपना (पासपोर्ट साइज) फोटो के साथ दाईं ओर छपा कूपन भर कर अवश्य भेजें. फोटो के पीछे भी अपना नाम, उम्र, पता और शौक अवश्य लिखें. पत्र-मित्रों के आपसी पत्र-व्यवहार के लिए सम्पादक लोटपोट की कोई जिम्मेदारी नहीं. फोटो व कूपन इस पते पर भेजें:–

लोटपोट मित्र सभा, लोटपोट साप्ताहिक, नई दिल्ली-110064

पत्र मित्रता-1067

नाम----------आयु-

पता----------

रूचि----------

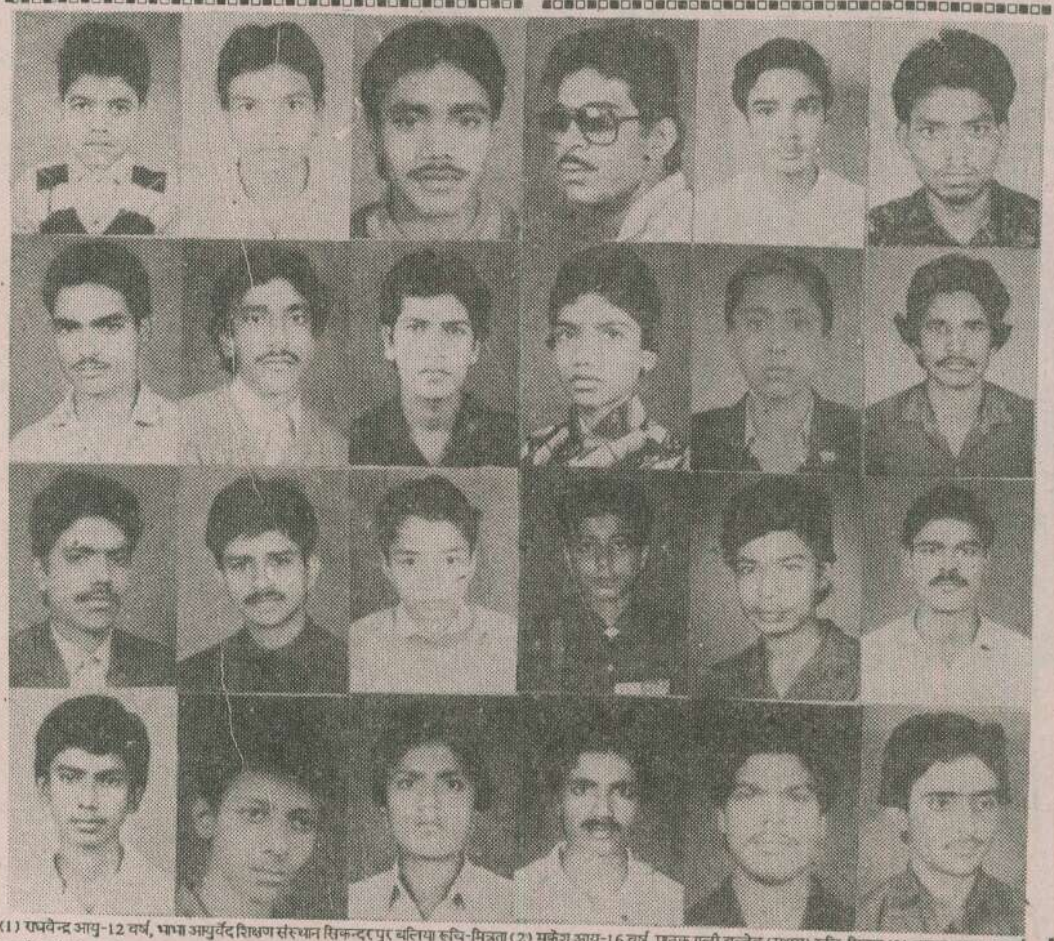

(1) राघवेन्द्र आयु-12 वर्ष, भाभा आयुर्वेद शिक्षण संस्थान सिकन्दरपुर बलिया रूचि-मित्रता (2) मुकेश आयु-16 वर्ष, पाठक गली बल्देव (मथुरा) रूचि-मित्रता (3) अजय आयु-19 वर्ष, लक्ष्मी आटो कोला रूचि-पढ़ना (4) सुरेश आयु-23 वर्ष, गाबा प्रोविजन स्टोर आर.सी.पी. बीकानेर रूचि-पढ़ना (5) जसकरन आयु-17 वर्ष, 19 गली नं. 1 दसमेश नगर लुधियाना रूचि-संगीत (6) रविन्दर आयु-18 वर्ष, उजरा डीह (गोहदा) पो. विशुनपुरा गाजीपुर रूचि-लोटपोट (7) मुन्ना आयु-17 वर्ष, रेल्वे गेट के पास पुष्पली गोरखपुर रूचि-लोटपोट (8) प्रदीप आयु-20 वर्ष, दुर्गा जनरल स्टोर बगहा स्टेशन-2 चम्पारण रूचि-मित्रता (9) रामेश्याम आयु-18 वर्ष, कपसथ पो. घरसीर्वा रायपुर रूचि-लोटपोट (10) महावीर आयु-17 वर्ष, सियान्वी गेट के अन्दर जवाहर भवन जोधपुर रूचि-लोटपोट (11) अनुपम आयु-16 वर्ष, जैन कालेज रोड़ मस्जिद गली एभरनपुर रूचि-लोटपोट (12) विनोद आयु-19 वर्ष, डी-5/1 देवेन्द्र नगर रायपुर रूचि-लोटपोट (13) जितेन्द्र आयु-21 वर्ष, सरस्वती ट्रेडिंग कम्पनी पान दरीबा लखनऊ रूचि-लोटपोट (14) आनन्द आयु-20 वर्ष, 821/114 सी प्लाट न. 3 मलदीया वाराणसी रूचि-लोटपोट (15) संदीप आयु-15 वर्ष, एफ ए/8 मानसरोवर गार्डन दिल्ली रूचि-खेलना (16) अमित आयु-12 वर्ष, 167-एश्रस्त्री नगर अमृतसर रूचि-खेलना (17) इमरान आयु-14 वर्ष, विक्कीज स्टोर्स नाका न. 1 के सामने सीतामढ़ी रूचि-खेलना (18) विरेन्द्र आयु-25 वर्ष, क्वाटर एफ 25,3 ए खेतड़ी नगर झुन्झुनू रूचि-फिल्म (19) कृष्ण आयु-16 वर्ष, 81/ए म्योर रोड़ रानापुर इलाहाबाद रूचि-लोटपोट (20) शफी अहमद आयु-16 वर्ष, द्वारा शमि अहमद मदरसा चौक शाहपुर बंछोनी रूचि-लोटपोट (21) हरीश आयु-21 वर्ष, अकी पेपर इण्ड. 11 जी, 1.डी.सी. कड़ी मेहसाना रूचि-मित्रता (22) अब्दुल आयु-17 वर्ष, द्वारा एस.डी.ओ.टी. आफिस टेलीफोन एक्सचेन्ज सीवान रूचि-क्रिकेट (23) प्रमोद आयु-18 वर्ष, सिद्ध नाथ प्रसाद स्वर्णकार नौबतपुर पटना रूचि-पढ़ना (24) भूषण आयु-16 वर्ष, जमालपुर जि. भिवानी रूचि-पढ़ना।

एक बार पंडित नेहरू मिश्र देश की यात्रा पर गये, जहां के राष्ट्रपति ने उनका हार्दिक अभिनन्दन किया।...

रात्रि भोज के उपरांत राष्ट्रपति ने नेहरू जी से पूछा 'आपके हिन्दुस्तान में तलवार से किस तरह लड़ा जाता है ?'

नेहरू जी ने तुरन्त एक पेड़ से लम्बी सूखी दो लकड़ियां तोड़ी, और एक राष्ट्रपति को दी...व एक स्वयं ने अपने हाथ में थाम ली...

फिर नेहरू जी ने तुरन्त अपनी अपनी लकड़ी को राष्ट्रपति की लकड़ी से भिड़ा दी....

यह देखकर राष्ट्रपति महोदय डर गये। उनकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि नेहरू जी क्या कर रहे हैं...?

उन्हें भय से कांपते देखकर नेहरू जी हंस पड़े और बोले 'आप को तो लकड़ी भी चलानी नहीं आती, फिर तलवार कैसे सीखेंगे ?'

-कमल सौगानी